तित्थयरवयण
Titthayarvayan

जिनकाव्या

लेखक
नायक अम्बर जैन

Mo. 9329779375
Telegram .... jain natyam
You tube.... titthayarvayan

जिनकव्या

1. आदिनाथ से बात
2. जिनवाणी माता तुम्हें
3. है अगम्य अनमोल अनंती
4. जिनवाणी माता ने
5. श्री पार्श्वनाथ जिन
6. हम पाए हैं
7. कौन दिशा मे नेमी
8. आई है अब निज शोध
9. कुंदकुंद आचार्य
10. परिणति हो सिद्धों सी
11. सिद्धों का वो निलय
12. सदगुरू सीख
13. अनुयोग
14. हीरा
15. वीतराग प्रभु
16. पधारो ज्ञानोदय
17. मुनिराज
18. जन्म कल्याणक
19. सम्यकत्व की महिमा
20. गर्भ कल्याणक
21. अहो अद्भुत है
22. नवधा भक्ति
23. प्रभु भक्ति धारा
24. गुरुदेव श्री को समर्पित
25. गुरु कहान ने
26. सची उद्धार
27. तुम न बोले कुछ
28.दिगम्बर वीर वे चाले
29.आई है अब निज
30. श्रीनाथ की वाणी
31.अंतर्मन पुलकित हुआ
32. धर्मी है निर्वाण पथिक
33. श्री मुनिराज वे वन में सोहें
34. बड़े हम मोक्ष महल की ओर

. हे पिता

. माँ तुम हां कह देना

. भूख

. दिगम्बर वीर वे चाले

. वेश देख पहचान न पाया

. मध्याह्न के तप्त समय में

बाल काव्या

1. सिद्ध प्रभु
2. मंदिर जी आओ
3. आईसक्रीम
4. Take a selfie
5. पाप
6. जीव भेद
7. आतम भैया
8. रत्नत्रय
9. Puzzle of तीनलोक
10. सात तत्व
11. त्याग की महिमा
12. शिविर में आओ
13. दादा दादी
14. We equal to computer
15. ओ पापा की परियों

श्री श्रुतदेव स्तवन

1.आदिनाथ से बात

बन गए तुम भगवान क्या तुमने ऐसा किया कमाल ||टेक||

साथ साथ मे लोग बहुत थे, सर्व कला में योग्य बहुत थे ।
असी मसी कृषि में सबसे आगे,युद्ध क्षेत्र में बहुत कुशल थे ||
पर वह मेरे साथ.... क्या तुमने.. ||1||

संग सहस्त्रों और बड़े थे, नग्न दशा धर गमन करे थे ।
तुमने सब तज के क्या पाया,बाकी सब जो खोज रहे थे ।
लौटे घर के द्वार........ .... क्या तुमने……………||2||

महीनों ध्यान किया न पाया, अनायास फिर केवल पाया ।
थी क्या नहीं आत्म सम्मुखता,तब तक क्यों न शिवपद पाया||
होता क्रमणियमित नाथ..... .... क्या तुमने…||3||

....

2. जिनवाणी माता तुम्हें जो जग न जान सका

जिनवाणी माता तुम्हें जो जग न जान सका ।। टेक।।

करें प्रभु कृपा यदि तो बालक श्रेष्ठ मिले।
मन्नत पूरी तुम करो तुमसे ही जगत चले ।।
ये कल्पित भ्रमणा रही इनसे न उभर सका।।1।।

भौतिक युग में जो दिखे बस उसको स्वीकारा।
वैज्ञानिक की बात को बस सत्य स्वीकारा ।।
तुमने बतलाई आत्मा उसको न जान सका ।।2।।

दूर निकट अतिसूक्ष्म सब बातें तुम बतलाती।
अल्प बुद्धि बस प्राप्त कर कहता मैं हूं ज्ञानी ।।
तुम सर्वज्ञ की बात हो तुमको न स्वीकारा ।।3।।

'नायक' जग के जो प्रभु वे कर्ता न होते।
गुरुवर आत्म स्वरूप में ही स्थित होते ॥
शतपथ तुम दिखला रही ये सब न मान रहा ॥4॥

दुःखी रहा इस भव में पर भव बर्बाद किया।
मिथ्यापथ दिखला रहे लोगों का संग किया ॥
बड़े अनुग्रह से अरे माँ तुमने दिखलाया ॥5॥

बड़े भाग्य से मिल गया जिनशासन मेरी माँ।
व्रत भक्ति तप कर लिया जीवन सब निकल गया ॥
प्रभु को तो बहुत सुनाई,तुमको न सुन पाया ॥6॥

....
....

3. है अगम्य अनमोल अनंती सुखदाई जिनवाणी

है अगम्य अनमोल अनंती सुखदाई जिनवाणी।। टेक।

मातृ अनुग्रह तनुज भविक के प्रति तो बहुत दिखाती।
यावत तावत नेक विधि युत पथ अपवर्ग दिलाती।
सीक स्वयं की शास्त्र बताए शिवशुख सहज प्रदाई ।।1।।

जग में जननी अभिज्ञान तव मोह भाव से होता।
तुम जग जननी वीतरागता से दिग्दर्शन होता ।।
मिथ्यामल हर सद्दृष्टि से जाना मै निज आतम ।।2।।

भव कांतार विशें परितः ही आकुलता थी होती।
चित्स्वरूप से विमुख निरंतर प्रीत सु पर में जोड़ी ।।
जिनवाणी ने कहा तभी लख तूं जिनसुख का शासन ।।3।।

कतिपय अंश सुखाभासों में था सर्वस्व लुटाया।

पर वैभव प्रति अहम भाव से हाहाकार मचाया।।
निज वैभव दे दिया हे माता नायक निज शुद्धातम ।।4।

4.जिनवाणी माता ने शुद्धातम प्रगट किया।

जिनवाणी माता ने शुद्धातम प्रगट किया।
जग का दिग्दर्श करा, निज से ही मिला दिया ।।टेक।।

श्रीनाथ की दिव्यध्वनि,गणपति ने मंथन कर ।
हम पर करुणा उमड़ी, यतिराज ग्रंथ रचकर ।।
जननी जग प्राप्त हुई, मुक्ति का पंथ दिया ।।1।।

जग में नाना प्राणी, सब चलें सत्य के पंथ ।
जिसको जैसे होवे, बस समझ आएं ये ग्रंथ ।।
इसलिए मुनिजन ने अनुयोग स्वरूप दिया ।।2।।

'नायक' गर देखें हम जिनवाणी में खुद को ।

नारकी सिद्धों तक की यात्रा में शामिल हों ।।

तब हो सकते हैं हम सिद्धत्व का मार्ग दिया ।।3

5.श्री पार्श्वनाथ जिन

नाम बनारस नगरी में, जन्मे पारसनाथ।

धनि धनि वामा मात है,अश्वसेन के लाल ।।

पारस नाथ जी सम्मेदाचाल जाएं, कि अब बारी हमरी ।। टेक।।

जन्म लियो श्री पारस स्वामि, जन्म मरण मिटाने,

राज तजो और करी तपस्या, मुक्ति पूरी को पाने।

हम भी पावे मोक्ष का मार्ग, की अब वारी हमरी है ।।

श्रावण शुक्ला सप्तमी आई मुक्ति पुरी प्रभु जाएं,

भव्य जीव के निमित्त कारण, शाश्वत सुख को पाने।

श्री जी को हम माथ नाय, की अब बारी हमरी है ।।

हम मिल प्रभू को शीश नवावें, उनके ही गुण गाएं

प्रभु सम निज का रूप निहारे, उन सम ही वन जाएं।

आत्मा ही है परमात्मा, की अब बारी हमरी है ।।

....

....

6. हम पाए हैं.......

[mei jhopadi k bhagya]

मेरी मुक्ति के द्वार आज खुल आए हैं

हम पाए हैं.......

हम पाए हैं पाए हैं आतम पाए हैं ।। टेक।।

हम पाए है जो आत्मा को ध्याये हैं,

निज ध्यान से करम झर जाएंगे।

शुद्धात्मा के ध्यान में रम जाएंगे ।।

हम पाए हैं.........

जाने कब से ये निधियाँ गंवाई है,

निज की न निधि मैंने पाई है।

अब भोग में न लौट हम फिर आयेंगे ।।

हम पाए हैं........

व्यभिचारियों से परिणति टाली है।

जिनवर पितु पास में आई है।

निज पास में बुला के बस थम जाएंगे ॥

....

7. कौन दिशा मे नेमी चले हैं राजुलिया —2

[Tarj..Aao re aao re gyanand ki]

कौन दिशा मे नेमी चले हैं राजुलिया

रोके रे रोको, कोई पूछो रे पूछो

कहां मौन चले... मौन चले ॥ टेक॥

(राजुल नेमीकुमार का संवाद)

ओ नेमी तुम कह तो रहे थे, राजमति तेरी संगनी ।

साथी नहीं कोई द्रव्य किसी का तूं कैसे मेरी संगनी ॥

पिछले जनम के नौ भव साथी —2

प्रीत न मोसे हटाओ रे.......

मुक्ति का पथ काहे भावे न राजुलिया ॥1॥

फिर काहे थे व्याह को राजी, काहे बाराती लाए थे।

राग में थे तब अब हैं वैरागी कैसे तुझे समझाएं रे ॥

समझाने की बात करो न —2

लौट के आओ गिरनार से......

अब हम चले है मोक्ष मार्ग की डगरिया ।।2।।

तीर्थंकर तुम चरम देह हो, मुक्ति पुरी को जाओगे।

मैं भी साथी बन के चलूंगी, दीक्षा अंगीकार के ।।

पंथ नहीं है राग का राजुल—2

पहले मोह नशाओ रे.......

छूटे कैसे मोह कैसे धारू में वैरागीया ।।3।।

नेमीकुवर अब बन गए जिनवर, अरहन्त पद को पाय के।

मैं भी चली अब समवशरण में …

• •

8. आई है अब निज शोध खोज की बारी

आई है अब निज शोध खोज की बारी ॥ टेक ॥

मैं कौन,कहां,क्यों,क्या कर्तव्य है मेरा ?
कब कहां जाऊं और क्या स्वरूप है मेरा?
इन प्रश्नों की करनी है खूब तैयारी ॥ 1॥

जो किया आज तक करते और करेंगे,
है किया किसे क्या इससे लाभ मिलेंगे?
सब की सुन पर क्या निज की अब तक मानी? ॥2॥

क्या मिला और क्या मिलता आया अब तक,
क्या चूक रहा जो खोता आया अब तक ,

अब सुनूं वही जो बात रही अनजानी ।।3।।

जग घूम घूम कर घूमा थमा न तब तक,
गंतव्य मिला न मुझे हे स्वामी जब तक,
गंतव्य यहां है पर में व्यर्थ पिछानी ।।4।।

में स्वयं स्वयं का कर्ता कर्म करण हूं,
निज में थित,निज को,पर से पूर्ण रहित हूं,
निज को पा जाऊं कहे यहीं जिनवाणी ।।5।।

• •

9.कुंदकुंद आचार्य

[baramasa]

पंचम युग में वरदान,मिले तीर्थंकर सम मुनिराज,

तत्व दर्शाया।

हे कुंदकुंद महाराज तुम्हे सिर नाया।

दक्षिण में जन्म सु पाया, तव कोण्डकुंडपुर ग्राम।

ग्यारह वय में ली दीक्षा, जिनचंद्र गुरू उपकार ॥

मां पिता मोह को त्याग,स्वयं निज चित्स्वरूप का

ध्यान, मुनिपद पाया ॥1॥ हे कुंदकुंद

यूं हुए अनेकों मुनिवर, तप ऋद्धि युक्त जिन यतिवर।

की लोकलोक की चर्चा, कर्मों का रूप प्रगट कर ॥

पर समयसार आधार, जगत किया समय प्रकाश,

अतः प्रथम पद पाया ॥2॥ हे कुंदकुंद

सद्दर्शन ज्ञान चरण मे,थित जीव बताए स्वसमय।
जो कर्म पुद्गलौं में रत,सो जीव बताए परसमय ॥
एकत्व सुनिश्चय आत्म, बताया सुंदर जग में नाथ,
बही में पाया ॥3॥ हे कुंदकुंद

सब बातें बहुत सुनी हैं,अनुभूति और रूचि है।
पर पृथक एक की प्राप्ति, इतनी भी सरल नहीं है॥
पर यही दिखाएं आप,यदि न कर पाएं हम प्राप्त,
तो छल न पाना ॥4॥ हे कुंदकुंद

न प्रमत्त अप्रमत्त बताया, बस गायक भाव जनाया।
इस रीति प्राप्त जो होता, बस वही आत्म समझाया॥
दृग ज्ञान चरित व्यवहार, सुनिश्चय एक मात्र परमार्थ, वही में आपा ॥5॥ हे कुंदकुंद

10. परिणति हो सिद्धों सी...

(तर्ज..नगरी हो अयोध्या सी....)

परिणति हो सिद्धों सी, अरहन्त समागम हो।
समकित के पाने पर, अंतर उजियारा हो ।। टेक।।

अब तक न जाना था,जग में ही भ्रमाया था।
विषयों में रच पच कर, सर्वस्व लुटाया था ।।1।।

पर अब तो जान गए, जिनराज के वचन सुने।
जिनदेव के दर्शन से, निजरूप के नयन खुले।।2।।

निर्ग्रन्थ के पंथ चलें,आगम अनुशरण करें।
मोहादिक पर लक्ष्यी, भावों को सहज तजें।।3।।

’नायक‘ तुम जगती के, जग साक्षी द्रष्टा हो।

तुम सम में हो जाऊं, कर्तृत्व न मन में हो ।।4।।

11. सिद्धों का वो निलय

सिद्धों का वो निलय, निज में ही मैंने पाया।

खोजा यहां वहां पर, सुख कहीं न पाया।। टेक।।

जो सिद्ध बन गए है, उनको जो जन भजें।

कहते कि वे विराजित,सिद्धालय में जा बसे।

पर वे तो निज में बैठे, निज को ही उनने ध्याया।।1।।

सिद्धों का जो सफर,सिद्धों से तय करे।

पर निज में ही निरंतर,सिद्धों सा अनुभवे ।

वह पाते सिद्ध पद को, कर कर्म का सफाया।।2।।

ये भक्त को कभी भी,न दर्श दे सकें।

जो सिद्ध बनता स्वयं,वो दर्श पा सके।

भगवान बन सकें हम,इनसे हैं हमने सीखा।।3।।

12. सदगुरू सीख.......

श्री सदगुरू की सीख

सुन ले श्री सदगुरू की सीख।

भोगे भोग सुख मान रहा पर दुख की खींचे कीर।। टेक।।

काल अनंत गवाए जग में , मिली प्रतिष्ठा खीव।

धन सुख प्रभुता मिली बहुत , अरु मिली ये जग की प्रीत।।

कुछ खोया कुछ मिला मिला क्या, जो निज सुख की रीत।

भव में सुख माने संग अटका, पुनः गिरा भव बीच।।

अब आया अवसर मत चूको,देख निजातम खीर।

गुण से भरी ये मृदुता मय है, अब ले इसको चीख।।

जो भव से चित हटे तो लगता, हो अंतर में लीन।

एक बार अंतर झांका तो , मिटे ये भव की पीर।।

....

13.अनुयोग

जिनदेव मुख तें खिरे हैं,अनुयोग चारों कहें हैं।

मोक्ष मग में लगाने का , प्रयोजन जो रखे हैं।। टेक।।

द्रव्य छः नव तत्व का जो बोध हमको करे है।

सात तत्वों को बता जो मोक्ष मग में धरे है।।

द्रव्यानुयोग कहे हैं —2

लोक तीनों कर्म की जो प्रकृतियों को कहे है।

गणित की बातों से हमको, मोक्ष मग में धरे है।।

करणानुयोग कहे हैं —2

महापुरषों की कथा पुराण उनको कहें हैं।

राग से वैराग्य तक जो मोक्ष मग में धरे है।।

प्रथमानुयोग कहे हैं —2

अनगारी सागारी जनों के आचरण को कहे है।

व्यवहार नय भी कथन कह जो मोक्ष मग में धरे है।।

चरणानुयोग कहे हैं —2

14.हीरा

हीरा न बोले निज बोल......................2

यदि लुहार से बोलन जाए, मार हटौरा ठोस ।।टेक।।

फिरत फिरत जग जिन गलियन मै, कीच माटी के कूर।

उत जाए अरु चाहे तिजोरी, ताज तहां कित होय।।

त्यों मै आतम गुनन अनंता जड़ वाणी क्यूं बोल।

बोल बोल भूला निज गुण को ,हीरा कूरा क्यों होत।।

शांत चित्त हीरा निज सुखिया, बैठा कोई छोर।

दूर देख जौहरी हर्षाये, पहिचाने तेरो मोल।।

• •

15.वीतरागी प्रभु तेरी अद्भुत छवि

वीतरागी प्रभु तेरी अद्भुत छवि,

नाशाद्रष्टि धरी तो धरी रह गई ।

देखे दुनिया को क्या वो तो अंतर में हैं।

लब्धी नव केवल की प्रकट हो गई ॥ टेक॥

सारी निधियां तजी निज की दृष्टि धरी।

आत्म दृष्टि जो ध्यायी जमी रह गई॥

आत्मदृष्टि का फल घाती चारों नशे,

सारी पाप प्रकृतियां वो क्षय हो गई॥1॥

इंद्र सारे वहां किन्ही रचना महा।

कोठी बारह बनाई वो स्वर्ण मई ॥

उनमें बैठे पशु नारी नर देव है,

खिरती दिव्याध्वनि ओमकारमई॥2॥

कैसा अद्भुत है प्रभु का ये समवशरण।

सारी जग की सुविधा यही पे धरी ॥

आए मानी भी तो देखे मानस्तंभ,

मानता वो टरी की टरी रह गई।।3।।

16.पधारो ज्ञानोदय

पधारो ज्ञानोदय हो ज्ञान उदय ,

दुख्ख नाश हों कर्म नाश हों मोह कर्म हो क्षय।

....

पंच बालयती चौबीसी शीतल प्रभु समवशरण।

पंच मेरु अरु पार्श्व प्रभु का मानस्तंभ अटल।।

....

यहां बैठ निज में थिर हो सम्यकता होवे दृण।

वीतराग की वाणी से मिटते हैं सारे भय।।

....

गुरु कहान ने तत्व बताया उसका ही यह फल।

गूंज रही है जिनवाणी ज्ञानोदय के हर कण।।

....

17 मुनिराज

ज्ञाता स्वयं को जिन्हों ने है जाना,

जग के विभव को सदा भिन्न माना।

निर्ग्रंथपथ पर वो अविरल चले है,अविरल चले है,अविरल चले है।।टेक।।

सिद्धों के सागर की सरिता बने हैं,

चिदानंद चेतन में लीन हुए हैं।

मुक्ति के पथ पर आगे बड़े हैं,आगे बड़े हैं ,आगे बड़े हैं।।1।।

ज्ञान की धारा में थिर जो भए हैं,

एकत्व चिद्रूप ज्ञायक भजे हैं।

सौम्य सुमुद्रा मुनिवर धरे हैं,मुनिवर धरे हैं,मुनिवर धरे हैं।।2।।

विनाशीक संसार क्षणता हैं जानी,

नग्न दिगंबर मुनि दीक्षा धारी।

लौकांतिक अनुमोदन को खड़े है,मोदन खड़े है,मोदन खड़े हैं ॥3॥

18. जन्म कल्याणक

नाद शंख की होवे, घंट नाद जब होवे,

ढोल नगाड़े बाजें, भेरी धुन गूंजाए।

जन्मे तीन लोक के नाथ, जन्मे तिहुंजग तारणहार॥

चार गति के जीव सुखी, इंद्रासन कंपित आज,

सात हाथ आगे जा सारे,देव करें नत भाल।

अतिशय पंच दिखे जगती को, लोग सभी खुशहाल॥1॥

शचि पधारी प्रभु को लाई, गर्व नारी पर्याय,

पुनः पुनः देखे प्रभुजी को, सम्यक दर्शन पाए।

नेत्र हजार बनाके इंद्र, प्रभु का रूप निहार॥2॥

पांडुक वन पर गए इंद्र ले, प्रभु अभिषेक कराने,

छीरोदधि तक इंद्र खड़े, कलशा हाथों में साजे।
जन्माभिषेक महोत्सव किन्हो, धन्य धन्य जयकार ॥3॥

....

19. सम्यक्त्व की महिमा

दर्शन की मैं महिमा गाऊं,जा ते होवे भव पार रे।
समदृष्टि जग में जग से रह, नित्य पराया जान रे॥

समदृष्टि शंका नही जिन पर, कांक्षा भव की त्याग रे।
आपहिं रूप निहार निरंतर,सब विधि दोष निकार के॥
मद मन त्याग विहाय कुपथ को, तत्व स्वरूप विचार रे॥1॥

इह भव पर भव पीड़ा मृत्यु,का भय मन से टार दे।
संवेगादिक प्रशमादिक से वह,निज को और निखारते॥
पंक रहित पंकज समदृष्टि, मुक्ति पुरी को पाए रे॥2॥

• •

20. गर्भ कल्याणक

आनंद में उत्साहे, माता अति हर्षाए।
होवे अचरज स्वप्न माहीं, अलौकिक शक्ति आए।।

गर्भ वास होवे तब देखा,माएं अति अकुलातीं।
पर तुमरे यह गर्भ कौन जो , तुम इतनी हर्षाती।।

आएं देवियां सेव करें, माता का रूप निहारे।
माता चिंत्वे अनुभूति में,आत्म स्वरूप निहारे।।

रत्न वृष्टि हो पूर्व मास छः, जन जयकार लगाएं।

तीनलोक मणि पूज्य जिनेश्वर मात गर्भ में आए।।

• •

21.अहो अद्भुत है ......

अहो अद्भुत है जिनका देश,

रत्नत्रय के बाग बगीचे, नग्न दिगम्बर वेश ।। टेक।।

बाघ गुफा जिनका है सुंदर, महल शांत परिवेश।

उस प्रासाद में निज रस भोगें, निज आतम से नेह ।।1।।

सुंदर सैया कंकड़ पत्थर पर जिनकी है देह।

धूल चढ़ी श्रृंगार चमकती, बज्र बिराजी शैल ।।2।।

जिनके देश दिखे पशु वानर, ऊपर चढ़ती बेल।

विषधार निलय बनाएं अपने, पर न करते द्वेष ।।3।।

विटपपति तेरी शरना में आते मोही नरेश।

वे वैरागी हो जाते हैं, धार दिगम्बर वेश ॥4॥

• •

22. नवधा भक्ति

तोरण द्वार सजे हैं हाथों, लिए कलश सुंदर कनक के।
जब मुनिवर का हो पढ़गाहन, भाग्य खुलेंगे हम भक्तों के॥

वे अतिथि न कर सकते हैं, हम आमंत्रण उनका जाकर।
हो भूपति उनके परिजन भी, देखें बस वे आश लगा कर॥

कई सूरज ढलते जब उगते ,एक दिवस श्री नग्न दिवाकर।
हो उत्साही जोर शोर से, करने लगते जन पढ़गाहन॥

हो पढ़गाहन यदि मिल जाए, जो मन ठानी योग्य विधि तो।
उच्चासन पर उन्हें बैठाएं, पादकमल का प्रक्षालन हो॥

पूजन श्री मुनि की करते हों, वंदन बारम्बार करे हम।
मन वच काया शुद्धि हो अरु, भोग नीर भी होवे प्रासुक॥

नवधा भक्ति हों फिर करते, मुद्रा छोड़ अंजुली धारण।
हो आहार विधि पूर्वक फिर, दे आहार हुआ मैं पावन॥

जो मुनिवर को दे आहार, न यश लालच अभिमान पूर्वक।
भोगभूमि में जन्म होय निज, भी सकता मुनिव्रत धारण॥

23,प्रभु भक्ति धारा में वहुँ ....

चिंतन में नित रहें प्रभु, उनका यश हम गाएं।
गुणोद्यान से उनके कुछ हम सुमन सुरभि पाएं॥
भेदज्ञान अनुपम सौरभ हमने है पाया॥1॥

हैं अनंत वैभव के स्वामी, नर सुर यश गाते।
तीनलोक पति की भक्ति से बंधन कट जाते॥
जिनमुद्रा लख श्री जिनवर का दर्शन है पाया॥2॥

जिनकी वाणी से नित बहती शाश्वत सुख धारा।
उसका जो आस्वाद करे तो भव दुख नश जाता॥
मुनिराजों भी निज आतम का गीत सदा गाया॥3॥

• •

24. गुरुदेव श्री को समर्पित

संत न देखा ऐसा संत न देखा _२
समयसार को देख स्वयं को समयसार देखा ॥

निवृत्ति का मार्ग भी चल कर मन मैं करे विचार।
सत्य मार्ग तो अन्य कोई है जिससे हो भव पार।
समयसार को भेंट किया फिर दामोदर देखा ॥1॥

लोकविवाद की न कर चिंता लालच का कर त्याग,
पुण्य कर्म का होय उदय तो रोटी मिले हजार ।
पापोदय से भी न डरकर संप्रदाय त्यागा॥2॥

हो एकाकी मिला सोनगढ़ श्रावक पथ स्वीकार

समयसार जग को बतलाया एक न उन्नीस बार
जिनप्रतिमा को देख स्वयं ही बही अश्रु धारा ||3||

लिखे बिना ही शब्द को भी न कह अपनी बात|
मूलाचार्यो के ग्रंथो सीमंधर की बात |
पुण्य कर्म को हेय बताया, धर्म नही छोड़ा ||4||

25. गुरु कहान ने गुरु……..

गुरु कहान ने गुरु लघुता का भेद मिटाया|

एक समय में समवशरण था दिव्यध्वनि थी
कुंदकुंद आदि गुरुओं मय ये पृथ्वी थी
होंगे उस पल पर अब तक में तिर न पाया||1||

जब पर शासन के विरुद्ध था सारा भारत |
समझ रहे थे मेरी है ये भूमि पावन||
यह भी पर स्वामित्व, यही तुमने है बताया||2||

हम लकीर के हो फकीर कुछ सुन न पाते|
सत भूले परिवार जनों का पथ अपनाते||
पर तुमने यह पंथवाद का कीट मिटाया||3||

गाड़ी जब भी चले फ्यूल को कर्ता माना।
है निमित्त ही कर्ता सब ने यह था जाना।।
पर निमित्त है कर्ता यह जग को समझाया।।4।।

जिनवाणी को विस्मृत कर जन अपनी बातें कहते।
धर्म नाम पर पंथबाद का नित ही पोषण करते।।
तुमने अपनी न कह मूलाचार्य को ही सुनाया।।5।।

26. सची उद्गार

सुन लो स्वामी, अंतर्यामी , तीन लोक के स्वामी ।।
मेरे हाथों में आए, मेरे हाथों में आए।। टेक।।

न बस प्रभु आए,निज गुण भी पाए।
आत्म प्रभु को पाया, ज्ञानानंद पाए ।।
यह सुख पाया, अब क्या आशा,श्री जिनेन्द्र की काया।।1।।

प्रथम गोद में पा कर, अंतर्ध्यान लगाकर।
यह सौभाग्य मिला है, हे तिहुंजग करुणाकर।।
हे करुणाकर, ज्ञान दिवाकर, मति श्रुत अवधि धारक।।2।।

सची पद के सुख भोगे, दिवा स्वपन संजोए।

आज समझ पर आया कि दुःख के बीच थे बोए।।

हुआ अंकुरण, सम्यक दर्शन, भव नाशक अभयंकर ।।3।।

• •

26. तुम न बोले कुछ

तुम न बोले कुछ,कह दिया सब कुछ।। टेका।

न ही देखा जग को केवल,

बस स्वयं को ही तो देखा।

सुख भिखारी जन को तुमने,

इतना कर के ये ही बोला।।

देख निज को , कह दिया सब कुछ।।1।।

हाथ थामों नाथ मेरे,

कहे दुनिया भक्त तेरे।

कर थमाया कर को निज के,

छोड़ झंझा सारे पर के।।

कर बिना कुछ,कह दिया सब कुछ।।2।।

जो मिला सब छोड़ डाला,

दिया जग को जग ये सारा।

क्यों न पर में उसके पीछे,

ही पड़ा क्या खाक पाया॥

छोड़ के सब,कह दिया सब कुछ॥3॥

. • • • • • • • • • • • • • • • • • •

27.दिगम्बर वीर वे चाले

न जग से आश, तज के राग, तन वैराग्य पथ चाले,

दिगम्बर वीर वे चाले......

है समता भाव, होके निर्भार, मोह की धूल विनशावें,

दिगम्बर वीर वे चाले......

केवल निज आतम ध्यावें, विषयों में नाही रमावें।

सिद्धों सम निज को लख कर, जग के पद सब ठुकरावें॥

है न कुछ संग, रहते नग्न, मुक्तिपुर पंथ को चाले॥1॥

दिगम्बर वीर वे चाले........

द्वादश अनुप्रेक्षा भावें, दस लक्षण निज में पावें।

शुद्धोपयोग में रत मुनि, सिद्धों सम आनन्द पावें॥

महाव्रत पाल समिति के साथ आवश्यक नित्य पल जावें॥2॥

दिगम्बर वीर वे चाले.........

शुचितार्थ कमंडल धारे, पीछी संयम अनुरागे।
एकाशन तेज शिखर पर, जिनशासन ध्वज लहराएं।।
लौंचते केश, कर्म की रेस, से सब कर्म भग जावे।।3।।
दिगम्बर वीर वे चाले..........

• •

28. आई है अब निज

आई है अब निज शोध खोज की बारी।। टेक ।।

मैं कौन,कहां,क्यों,क्या कर्तव्य है मेरा ?
कब कहां जाऊं और क्या स्वरूप है मेरा?
इन प्रश्नों की करनी है खूब तैयारी।। 1।।

जो किया आज तक करते और करेंगे,
है किया किसे क्या इससे लाभ मिलेंगे?
सब की सुन पर क्या निज की अब तक मानी? ।।2।।

क्या मिला और क्या मिलता आया अब तक,
क्या चूक रहा जो खोता आया अब तक ,
अब सुनूं वही जो बात रही अनजानी।।3।।

जग घूम घूम कर घूमा थमा न तब तक,

गंतव्य मिला न मुझे हे स्वामी जब तक,

गंतव्य यहां है पर में व्यर्थ पिछानी।।4।।

में स्वयं स्वयं का कर्ता कर्म करण हूं,

निज में थित,निज को,पर से पूर्ण रहित हूं,

निज को पा जाऊं कहे यहीं जिनवाणी।।5।।

....

29. श्रीनाथ की वाणी

श्रीनाथ की वाणी, जग कल्याणी, शिवसुख दाई है।

ये मेरी माँ जिनवाणी है ।। टेक।।

नव पदार्थ छह द्रव्य और जो तत्व सात दिखलाए ।

बहिरातम अंतर आतम परमात्म जीव बताए ।

सकल ज्ञेय दर्शक जिन आतम रूप दिखाती है ।।1।।

जीवन कैसे सुखमय हो यह कला तुम्हीं सिखलाए।

जनम मरण का नाश कराने का यह मार्ग दिखाए।

अहो अजन्मे ज्ञायक प्रभु का ज्ञान कराती है।।2।।

सकल नयों से पार निजातम को नय से समझाए ।

नय पक्षातिक्रांत समय का सार सहज बतलाए ।
हैं मेरी माँ हर दम मेरी ही बात सुनाती हैं।।3।।

• •

धर्मी है निर्वाण पथिक

धर्मी है निर्वाण पथिक क्यों, बंधन चाहे कर्मों का ?

शुभ से स्वर्ग नरक का, बंधन पाप भाव से होता है।
दोनों ही संसार मार्ग हैं, मोक्ष न इनसे होता है ।।

दुनिया के सब पंथ मजहब में, पाप कर्म की निन्दा हो।
पुण्य कर्म भी बंध सत्य वह,त्याज्य योग्य इसे जो कहता हो।

भाव शुभाशुभ तो ज्ञानी के, यथायोग्य ही होते हैं।
पर दृष्टि में सदा इन्हें वह, त्याग अहित ही कहते हैं।।

मान रहा था कि केवल ,शुभ से शुभकर्म बंध होता।
पर ज्ञानावरणादिक में, शुभ का स्थान नहीं होता।।

बंधते हैं वह भी तो कैसे, पुण्य मात्र सुख का दाता।
बंध हेतु है कारागृह है, चाहे सोने से बांधा।।

न चाहूं वह पुण्य कर्म जो इन्द्रिय सुख वैभव देता।
पाकर उसके आत्म हीन फिर पाप कर्म ही तो बोता॥

अतः त्याग शुभ और अशुभ की चिदानंद में रम जाऊं।
श्री अशरीरी निकल परमपद सिद्ध प्रभु सम हो जाऊं॥

श्री मुनिराज वे वन में सोहें।

बदले वायुमंडल शीतल से क्षण में हो ग्रीष्म भयंकर,
पर चित डिग न जिनका होवे श्री मुनिराज वे वन में सोहें।
ठिठुरती पवन चले बर्फानी, हल्का हल्का गिरता पानी।
तप्त रवि क्षण में उगता होवे,श्री मुनिराज वे वन में सोहें।
चहकती कुहूकुहू कहे कोयल,दिखती मोर हुई फिर ओझल।
क्षणिक पर मग्न न इनमें होते,श्री मुनिराज वे वन में सोहें॥
गरजते मेघ भयंकर ऊपर, रहती शांत तथापि मूरत।
हवा कितनी तूफानी होवे, ,श्री मुनिराज वे वन में सोहें॥
तरु उन्मूल अनिल से होते, मरी माँ को लख मृग शिशु रोते।
धूसर तन मुनिवर का होवे, श्री मुनिराज वे वन में सोहें॥
केशरी मुख हो लाल रुधिर से, भयंकर शोर गरज स्वर ऊंचे।

शांत मुनिमुद्रा को लख होवे,श्री मुनिराज वे वन में सोहें।।

बड़े हम मोक्ष महल की ओर.

त्याग संसार विकल्पों को और मन ठानी हो।

बड़े हम मोक्ष महल की ओर..........।। टेक।।

जहां न बाधा है कण कण सभी स्वाधीन रहें।

मुक्त भगवंत निजानंद में सदा ही लीन रहें।।

न चलती मोक्षमार्ग में अरे कोई मनमानी हो ।।1।।

रजत सिद्धालय के ऊपर विराजे हैं जिनवर।

एक में बसते अनेक अनंतों सिद्ध भगवन।।

वहां न सर्दी गर्मी भूख प्यार न व्याधि हो ।।2।।

यदि पा जाएं सम्यक दर्शन ज्ञान चरण सुंदर।

मुनि भगवंत बने और कर जाएं श्रेणी रोहण।।

बने अरहन्त नाश यहीं ये जग कहानी हो ।।3।।

आज प्रभु दर्श मिला

अंतर्मन पुलकित हुआ,

आज प्रभु दर्श मिला।। टेक।।

मन हर्षाएं मंगल गाएं,

श्रद्धा सुमन सब खिल खिल जाएं।

सविनय मस्तक को झुका....आज प्रभु दर्श मिला।।1।।

भामंडल सिंहासन सोहे,

छत्र चवर दिव्यध्वनि मोहे।।

दुंदुभी अशोक रत्न वर्षा.......आज प्रभु दर्श मिला।।2।।

भक्त नहीं भगवान् बनाएं,

प्रभु गुण सम निज गुण को बताएं

देखी निज में अनंत प्रभुता.....आज प्रभु दर्श मिला।।3।।

वेश देख पहचान न पाया

(व्यक्ति का वेश देख लोग उसके वचनों को सत्य मानने लगता है, पर शब्दों की परीक्षा भी करना आवश्यक है)

वेश देख पहचान न पाया,

सत्य बोध से रहा अजाना।

देख रूप की चित्रविचित्रा,

उनको ही आदर्श बनाया॥

भांड स्वांग जब नेक बनाता,

श्याम सुशीला रूप दिखाता।

शब्द सुने बिन निर्णय करते,

पात्र परिचय लख कर करते॥

अनजाने जन देख स्वांग को,

सुन आलाप दशानन नट को।

कह दे मंदोदरी हरण को,

सत्य कथन ही माने उसको॥

यह अपराध दशानन का न,

साधारण दर्शक जन का न।

रावण वेश रखे जो नट है,

किया प्रवर्तन मिथ्या वच का॥

जो सत्पुरुष सत्य को जाने,

शोध खोज से उसे बताए।

यद्यपि वह न पात्र स्वांग का,

पर न रुचे ये मिथ्या भ्रमणा॥

वेश धारी को सत्य मानते,

जो अबोध न सत्य समझते॥

करें समर्थन सज्जन सत का,

बहिष्कार पर मूर्ख उतरते॥

नेक पुरुष को मतलब क्या रे,

वह तो केवल सत्य बताए।

झगड़ों में चुप रहे निरंतर,

सत्पुरुषों की गाथा गाए।।

....

मध्याह्न के तप्त समय में

मध्याह्न के तप्त समय में, अश्म[1] शिला रवि की किरणों से।

हों अलात[2] वनचारी छिपते, तरुतल में पथगामी थमते।।

उस परिवेश में एक मुदित[3] सा ,पारिजात का नन्हा पौधा।

अवनि पकड़े अंबर छूता , पत्र एक न उसका सूखा।

क्यों ऐसा जब पुष्कर[4] सूखे, सबकी छत पर गेहूं सूखे।।

तर[5] पट तरकारी को बचावे, शीन[6] तरल बन बहता जाए ।

पर कैसा मंदार का बूटा[7], अवनि पकड़े अंबर छूता।।

कारण कि जब शोध खोज की,अंत समय उससे ही पूछा।

कहा मूल तो मूल है मेरी,जो तो नित्य नमी में डूबी।।

क्यों उद्विग्न[8] फिर कर पाएंगे ,तप्त मुझे न कर पाएंगे।

जो जड़ से मजबूत है होता,हृदय आत्मद्रिण जो नित रहता।

फिर कैसी भी दशा जगत में,कितनी आए दुविधा जग में।
हो प्रसन्न न भावुक होता , पारिजात सम जग में होता ॥

1. पर्वत 2. अंगारे 3. प्रसन्न 4.समुद्र 5 गीला 6. वर्फ़ 7. पौधा 8. दुखी

. /././.

हे पिता पितामह परमपिता, गुरु दादागुरु गुरुवर कहान।
दी सीख करूं में सत्य खोज, वंदन करता तुम यथायोग्य ॥

रूढ़ी से जो कुल परंपरा कुल में चलता जन स्वीकारें।
जो पिता करे वह पुत्र सत्य ही मान उसे ही स्वीकारे ॥
पर मेरे पिता की सोच अलग जो रूढ़ि को न स्वीकारा।
इसका ही फल की चला अलग में पर सत को ही स्वीकारा।

कोई निर्दय बीमारी में हो पूर्व सुनिश्चय मृत्यु का।
रिश्ते नाते सब घर वाले परिचय दें अंत समय अपना ॥
पर उनमें जो सत्संबोधन दे उसको ही बस अपना माना।
है धर्म मात्र साथी अपना दादा से यह मैंने जाना ॥

गुरुओं ने जो दी सीख सत्य को समझ, नया कुछ पाने की।
दी भिन्न भिन्न विधा नाटक, वक्ता लेखक बन जाने की ॥
है सदा समर्थन रहा और दुनिया का गया दिया अद्भुत।
जीवन से सीखा है उनके मन दृढ़ तो कुछ न हो निष्ठुर॥

साहित्य सृजन कर परम्परा में कई विद्वान बना डाले।
पंचम युग जी अंत समय तक जिनवाणी को ही समझाएं॥
वे गुरु के गुरु हैं दादा गुरु, उनको ही पढ़ने से पाया।
जिनवाणी के उन गूढ़ तथ्य को, ऋजुता से में स्वीकारा॥

इन सब से सीख सीख कर में जिन महापुरुष तक पहुंचा हूं।
वे सत्य मार्ग बतलाते हैं, यह दावे से मैं कहता हूं॥
जो मान लोभ पद सब तज बस निज आतम के रसिक हुए।
श्री कुंदकुंद आदि ऋषियों के कहान गुरु अनुयाई हुए॥

जिनके पद कमल अधर में सब नरपति इंद्रादिक झुकते हैं।
पर निज में थित परम पिता कर तल कर ही दिखते हैं॥

उनसे जाना जग में जो सब यश सुख के साधना को पाया।
हे त्याज्य सकल जग दंद फंद ये दुख साधन जग की माया।

• •

माँ! तुम हां कह देना......

अध्ययन प्रभावना आराधना के समय में,
मै तुमसे आज्ञा लूंगा माँ! तुम हां कह देना......

सदा तुमने प्रेरणा दी, आत्मनिर्भर रहने की ही,
काम करना सब सिखाए,आत्मदृढ़ता तुमने ही दी।
अब अकेला मै रह लूंगा माँ! तुम हां कह देना......॥

सहयोग पूरा दिया तुमने,मोह है पर तजा तुमने,
धर्म का पथ जो दिया है,पिता भाई बहन तुमने।
इसी पथ पर बढ़ रहा हूं माँ! तुम हां कह देना......

जैनत्व के संस्कार गुण के,दिए बचपन से ही तुमने,
पूर्ण दृढ़ता से करूंगा,यह सुसंबल दिया तुमने।
त्याग हेतु जब कहूंगा माँ! तुम हां कह देना......

भाव आता सहज ही है,सत्य पथ बस यह ही है,
प्रभावना का भाव आता, यूं तो आज्ञा मिली ही है।
बस जब में आज्ञा मांगू माँ! तुम हां कह देना......

जो धरम का मरम जाना,और जब तुमको बताया,
सहज माना ऐसा ही है,बहुत बातें यही की हैं।
व्यस्त होने पर भी इन बातों को माँ! तुम हां कह देना......

जब धरम के पथ बढूंगा,दूर तुमसे भी रहूंगा,
छोटा हूं चिन्ता रहेगी, पर न इससे मना करना।
विषम पल में भी कहूं तो माँ! तुम हां कह देना......

तत्व के प्रचार में जब,विरोधी जन बीच में हम,

पढ़ें यदि संकट में थोड़े,तुम न इसकी फ़िक्र करना।
तो भी इस पर ही चलूं तो माँ! तुम हां कह देना......

सत्य बातें जब कहूंगा,सत्य हेतु ही लडूंगा,
प्रिय भी कुछ दूर होंगे,धर्म का प्रतिरोध होगा।
फिर भी मैं न रुकूं माँ! तुम हां कह देना......

मै अकेला एक तट पर,विरोधी सैलाब होगा,
विश्वास कर तुम की सदा में, जिनप्रभु की ही कहूंगा।
जिनवाणी के प्रचार में माँ! तुम हां कह देना......

सफर में जब तय करूंगा,कभी भूखा भी रहूंगा,
तत्व के प्रचार हेतु,यदि घर में न रहूंगा।
फिर भी तत्व प्रचार करने माँ! तुम हां कह देना......

सत्य पथ बस एक ही है, श्रेष्ठ निर्ग्रन्थ वेश ही है,
उसी पथ पर ही बढूंगा, माँ तुमने भी छोड़ दूंगा।

आज्ञा लेने आऊं जब माँ! तुम हां कह देना......

• •

भूख

नश्वर तन का यह भाग उदर, जब क्षुधा रोग में होता हो।
जन भोग समर्पित कर देते, जब जीव भूख को रोता हो ॥

भूख शांत मानी जाती, भर पेट मनुष्य के भरने से।
पर भूख शब्द यह व्यापक है, हम अच्छी तरह समझ लेते ॥

है भूख नाम उस इच्छा का, जो प्राणी को मजबूर करें।
न रहती जितनी खप्पर में, पर महलों में भरपूर रहे ॥

है भूख भूख में फर्क अरे, यह भूख शब्द ही व्यापक है।
बूढ़े गरीब की मिट जाती, धनिकों यह न नाशक है॥

है भूख न केवल रोटी की, रोटी की भूख तो सुगम मिले।
है भूख भयंकर उन नर की, जिसको खाने भरपेट मिले ॥

इस भूख से ना कोई मरता, वह जो रोटी की आश तके ।
है आश जो दुनिया को पाने की, वह ही नर संहारक है।।

यह भूख लड़ाई कर देती, भाई भाई की घर-घर मै ।
भूख पराई कर देती, भरपेट सुखद से जीवन में।।

है भूख बड़ी संपत्ति की, यह भूख बड़ी प्रभुता की है।
वह भूख मनुज मानस होती, स्वर्णिम प्रसाद की ओटो में।।

पर क्या इलाज इस भूख का है, क्या है क्षुधा रोग नाशक कोई ।
जो भूख नाग को नष्ट करें, क्या तृप्त करें इसको कोई।।

हां है उपाय इस भूख नाग का, जो न रोटी की चाह रखे ।
तन से हटकर कुछ पाने की, यह भूख आओ हम शांत करें।।

अब तक तो समझ ये आ ही गया, की भूख नाम इच्छा का है।

इच्छा को नाश किया जिसने, वह ही अजेय हो सकता है ॥

बिन खाए पिए बस मौन रहे, इहलोक भूख जो तजता है।
वह ही है सच्चा शूरवीर, जो मस्त स्वयं में रहता है॥

b

समय नहीं सरकार तुम्हे अब ध्याने का,
पास पड़ी पहचान को जग में लाने का।
व्यर्थ जल्प जग दंद से जब विश्राम मिले ,
तब चित का हो ध्यान स्वयं को पाने का ।

हे सन्मति क्यों तुमसे मांगू, धन यश रति घरबार महा।
त्याग दिए जब तुमने ही तो, क्या सुख दे पाएं ये भला ॥
नाथ गए तुम निज वैभव में, पर इच्छा का दमन किया।
निज सुख को ही प्राप्त करूं में, यह तुमने उपदेश दिया ॥

वर्धमान जग तुमको देखे, आश नयन द्वय एकटक कर ।
पर तुम केवल अंतर्मुख को, बस निरपेक्ष भाव में रत ॥
बिना कहे तुम कर तल कर रख, अकर्तृत्व बतलाते हो ।

अरे मूर्ख में ही जो तुमको करने को उकसाता हूं।।

तित्थयरवयण
Titthayarvayan

बाल काव्या

नायक अम्बर जैन बलेह
Mobile 9329779375

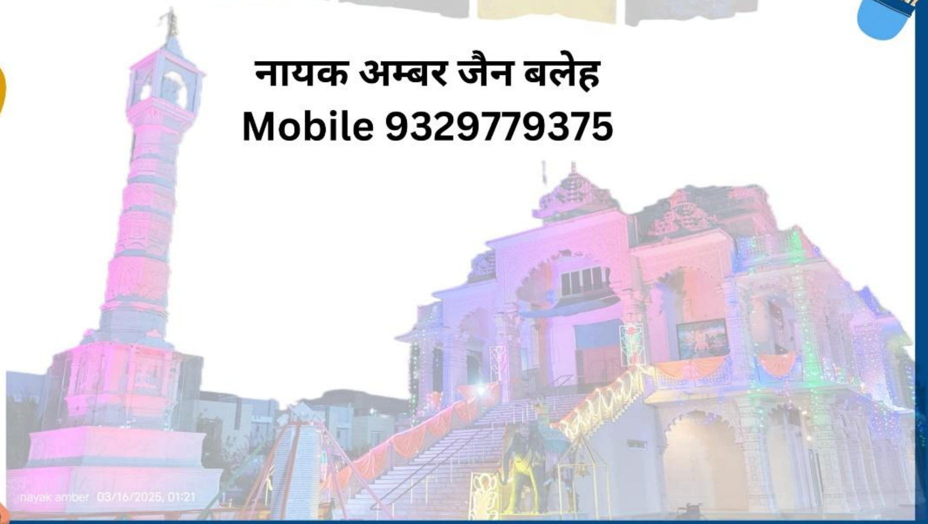

1

सिद्ध प्रभु

सुन सुन चेतन जल्दी सुन,
सिद्ध प्रभु के जानो गुण।
गुण अनंत के धारी हैं,
तीन लोक के स्वामी हैं।
कर्म आठ का नाश किया,
अष्ट गुणों को प्रगट किया।
सिद्धों के गुण गाना हैं,
उन सम ही बन जाना है।

2

मंदिर जी आओ

आओ जी आओ, मंदिर जी आओ
प्रभु को निहारो, उनको पहचानो।
हम उनको लखते, वे निज को लखते।
हम हैं सरागी, प्रभुजी वैरागी।
दुख हम बताते, वे सुख दिखाते।
सुख है अपने में,न बस सपने में।
हम निज को जाने प्रभु सम बन जाएं।

3

आईसक्रीम

छोटा सा बच्चा घूमने गया, आईसक्रीम की एक दुकान में रुका।

आईसक्रीम को देखा, रोने लगा, मम्मी ने उसको डांट के कहा

कभी न कभी न कभी न

वो छोटा बच्चा पूछने लगा, आईसक्रीम को क्यों मना करती हो माँ ?

माँ ने बताई उसकी दशा , कितनी बुरी है ये भी कहा.

कभी न कभी न कभी न

आईसक्रीम में कितने जीव हैं पड़े , MSG पाउडर उसमें डले।

नाली के पानी से वो है बने , इसीलिए में तो उसको खाऊं ही न

कभी न कभी न कभी न .....

4

Take selfie with happy face

How can make we happy face ?

Step 1st is क्रोध तजो , क्षमा भाव को ग्रहण करो।

Then take you selfie, happy happy happy 😄 .

Take selfie with happy face

How can make we happy face

Step 2nd remove मान, मृदुता is the जग ki शान।

Then take you selfie, happy happy happy 😄 .

Take selfie with happy face

How can make we happy face

3rd selfie with aarjava , forgot always maya

Then take you selfie, happy happy happy 😄 .

Take selfie with happy face

How can make we happy face

Only take a selfie, होना न है लोभी

Then take you selfie, happy happy happy 😄 .

5.पाप

पांच पाप को जाने क्यों ?
ये जग में ही होते क्यों ?
हिंसा से सब जीव दुखी ,
न हिंसा तो परम सुखी ।
झूठ बोलने बालों को,
हम अपने घर लाएं क्यों ।
चोरी जो जन करते हैं,
बुरा उन्हें हम कहते हैं ।
है कुशील जग में निंदा ,
न साथी कोई रहता ।
परिग्रह करना पाप है ,
बुरे लोग की शान है ।

6

जीव के भेद

चेतन धारी चेतन धारी जो जो जो.....,
उनको जाने आज हम ओ हो हो.......,
संसारी और मुक्त जीव हैं दो दो दो......,
इन दोनों के भेद कहे हैं दो दो दो .....।
प्रभु अरहंता सिद्ध महंता ओ हो हो..... ,
मुक्त जीव का ध्यान करें हम ओ हो हो..... ।
संसारी में त्रस स्थावर ओ हो हो.........,
दु ति चौ पां इन्द्रि वाले त्रस ओ हो...... ।
पृथ्वी जल वायु अग्नि स्थावर हो...
वनस्पति हमको बनना है नो नो नो.... ।
पंच इंद्री हम जैसे हैं जो जो जो....,
कुछ मन वाले , बिना है मन के वो वो वो... ।
इन जीवों के भेद जानना है हमको......,
इनमें श्रेष्ठ सिद्ध पद पाना है हमको...... ॥

7

आतम भैया आतम भैया कौन हैं ?
कौने में बैठे भैया जी मौन हैं।
देख जगत की चका चौंध को रो रहे,
पर द्रव्यों के अहम भाव में खो गए।
करना करना दिखता भाई क्यों तुझे,
एक बार तो निज वैभव को लख सही।
गुण अनंत हैं, उनका स्वामी तू ही है,
सबसे अच्छा सुख का धारी तूं ही है।
एक बार बस जानो खुद को आत्मा ,
खुश हो जाओ तज के जग की वासना ॥

8

रत्नत्रय

चलो चलो चलो चलो मोक्ष महल को जाना है।
काल अनंत वहां पर हमको सिद्ध परम पद पाना है॥
सम्यक दर्शन पहली सीढ़ी पहले उसको पाना है।
ज्ञान प्राप्त कर निज आतम का मुक्ति बधू को पाना है॥
सम्यक चारित्र सीढ़ी पर जो जल्दी से चढ़ जाता है।
मोक्ष महल में वो बस जाता जग स्वामी कहलाता है ॥

9.

Let's make puzzle of तीन लोक।

how do we make तीन लोक।

Please collect that pieces six.

Then we can it's method fix .

1st Piece is jeeva , तीन लोक में होता ,

2nd पुद्गल Visible , अनंत इसके पार्टिकल्स।

धर्म द्रव्य फिर जोड़ो , अधर्म कहे कि रोको।

आकाश इसका base है , जगह सभी को देत है।

Last part is काल द्रव्य , यह जानो छहों द्रव्य ।।

10

सात तत्व

जीव राजा आते नखरे बहुत दिखाते।
निज को नहीं लखते, बुरी संगत में पढ़ते।
ये तो सबको जाने, सबको ही पहचाने।
इनके दोस्त अजीवा, सदा अचेतन रीता।
इन दोनों की दोस्ती, सदा जीव को कोसती।
जब ये घर को आता, आश्रव तब कहलाता।
है आश्रव दुखकारी, नहीं माने अज्ञानी।
तभी बंध है होता, दुख का बीज है बोता।
ये तो सदा मलिन है, अरु विपरीत चलन है।
जब ये राजन जाने ज्ञानी वो कहलाए॥
संवर तब हो जाता, तोड़ अजीव से नाता।
फिर अजीव घर आए, अरु व्यवहार जताए।
राजा न अपना माने , संवर तब कहलाए।
जब जीव न हंसता, जाने लगता।
निर्जरा वह कहलाते,एक देश खिर जाएं।
कर्म भागने लगते अपनी हार समझते।
पूर्ण नाश जब होता, मोक्ष तभी हो सकता।

11

त्याग की महिमा

त्याग की देखो महिमा प्यारी, पुण्य बड़ा ही मिलता है।
स्वर्ग मोक्ष का कारण बनती, सच्चा सुख भी मिलता है॥
एक भील की सुनो कहानी, त्याग किया कौए का मांस।
मरण समय में हुई परीक्षा, प्राण चाहो तो खाओ मांस ॥
नही! मुनि से नियम लिया था, कौए का न खाऊं मांस ।
इससे अच्छा प्राण ही तज दूं, मुझको इससे लगेगा पाप ॥
देखो भील की अडिग प्रतिज्ञा, दृढ़ता से नित की पालन।
बने तीर्थंकर महावीर प्रभु, त्याग की महिमा मनभावन॥

12

शिविर में आओ

मम्मी पापा मम्मी पापा जल्दी आओ जी,

मंदिर जी में शिविर लगा है उसमें आओ जी ॥

क्या करेंगे शिविर में जाके, हम थोड़ी न बच्चे हैं।

इनसब की तो उमर निकल गई, हम तो घर पर अच्छे हैं ॥

मम्मी ये न टाइम पास है, कैसी बातें करती हो।

जिनवाणी के तो बच्चे ही हो, फिर क्यों उससे हटती हो ॥

तुम मेरी मां वो जग की मां, वह तो बड़ी महान है।

इसीलिए तो कहते पापा, वह जिनशासन शान है ॥

13

दादा दादी

उमर निकल गई सारी, पर प्रभु की न मानी।
इसीलिए तो रोती रहतीं, दादा दादी नानी॥
दादा दादी अब भी, मंदिर जी यदि आओ।
जिनवाणी को पड़ कर, दुख को दूर भगाओ॥
जो जिनवाणी पढ़ते, उसकी बात समझते।
धर्म मार्ग में लगते , वे ही सुखिया रहते॥
हम न रोने वाले, जब हों चश्मे वाले।
क्योंकि धर्म पड़ा है, आतम रूप लखा है।

14

we equal to computer

We are like just computer.

Some things are just similar.

Software equal परिणाम .

अच्छे हो तो करता काम।

Hardware equal body

अच्छी खाओ रोटी।

If we put in input good .

Always we get output good .

15

ओ पापा की परियों, जिनवाणी की सुनियो।
यदि रहोगी बढ़िया, तभी बनेगी परियां।
फास्ट फूड न खाओ, पेट नहीं बढ़ाओ ,
क्लीन टीथ यदि चाहो, चॉकलेट को त्यागो।
ओ पापा की परियों, जिनवाणी की सुनियो।
सुंदर रहना है तुम्हे तो , क्रीम लिपस्टिक त्यागो।
नित जिनदर्शन करके, निज परिणाम सुधारो॥
मात पिता की मानो, धर्म मार्ग अपनाओ ।
ओ पापा की परियों, जिनवाणी की सुनियो।

🙏🙏🙏🙏🙏

श्रुत परम्परा का इतिहास स्मरण कराने रूप

श्री श्रुतदेव स्तवन

मैंने आचार्य इंद्रनंदी देव द्वारा रचित श्रुतावतार ग्रंथ को आधार बनाकर श्रुतदेव स्तवन काव्य की रचना आर्यिका रत्न 105 मृदुमति माताजी द्वारा रचित **पुरुदेव स्तवन** काव्य की धुन पर यह की है जिसमे आदिनाथ भगवान से लेकर श्रुत रचना तक किस प्रकार श्रुत ज्ञान की परंपरा चली है उसे संक्षिप्त में उन सब की समयावधि बताते हुए श्रुतदेव स्तवन काव्य लिखने का प्रयत्न किया है।

रचयिता

नायक अम्बर जैन बलेह

Mo.9329779375

{दोहा}

जिनवर श्री अरहन्त को, नमोस्तु बारंबार।

जयतु श्री श्रुतदेवता, द्वादशांग हित सार॥

गणधर मुनि की श्रृंखला, चली सुश्रुत व्याख्यान।

श्री मुनि ने लिपिबद्ध कर, किया भव्य कल्याण॥

है प्रमाण श्रुत देवता, जैन धर्म के मूलभूत यह प्राण।

इनकी भक्ति हो किस तरह, यदि न होवे इनका वर्णित ज्ञान॥

<u>भावार्थ</u> - मै श्री अरहन्त जिनेन्द्र देव को, गणधर मुनियों की श्रुत परम्परा और आचार्यों मुनियों द्वारा लिपिबद्ध हित रूप द्वादशांगमय श्रुतदेव को नमस्कार करता हूं।

यह श्रुत अर्थात् आगम वस्तु का ज्ञान कराने हेतु प्रमाण ही है, इन श्रुत को जाने बिना हम उनकी भक्ति नहीं कर सकते, अतः इन्हें जानना आवश्यक है।

……

जो ये दिखते हैं सत्यधर्म सारे, कैसे जाने हम कौन हैं प्रामाणिक।

उनके शास्त्रों के अध्ययन से सत्य पंथ अवलोकन,

लेकिन पहले आवश्यक, किसके द्वारा लिखे गये है शास्त्र॥

जयतु जिनवर श्रुतदेवता गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान॥1॥

....

उनको ही हम मानते प्रामाणिक, जो नित करते हों सत्य उद्घाटित ।

पर सत्य वही कह पाता जो स्वयं सत्य का ज्ञाता,

ज्ञाता केवली सर्वज्ञ हैं, जिनके द्वारा कहा गया द्वादशांग ।

जयतु जिनवर श्रुतदेवता गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ।।2।।

<u>भावार्थ</u> – हर किसी को अपना कुल परम्परा से चला हुआ धर्म सही लगता है, प्रत्येक धर्म में उनके आगम मान्य है जो कि अगल अगल व्यक्ति द्वारा कहे गए है जिनमें परस्पर विरोध दिखता है, उनके अध्ययन से ही हमें सत्यता की पहचान हो सकती है, हमने जिनवाणी का अध्ययन किया है, और वह श्री सर्वज्ञ के ही वचन है यह उनके इतिहास को जानने से ही हमें सिद्ध होगा । इसीलिए मैं श्री श्रुत देव का इतिहास आपको सुना रहा हूं।

प्रामाणिक वही होता है जो नित्य सत्य का उद्घाटन करता हो, सत्य उद्घाटित वही कर सकता है जो स्वयं सत्य को जानता हो और सत्य जानने वाले मात्र सर्वज्ञ ही हैं जिनके द्वारा द्वादशांग कहा गया है।

वह सर्वज्ञ अनंत हुए हैं, जिनमें से वर्तमान में चौबीस तीर्थंकरों ने इस श्रुतपरम्परा को प्रवाह रूप दिया।

....

युग के आदि मे आद्य प्रवर्तक, द्वितीय श्री अजित जिनेश्वर ।

संभव अभिनंदन वांचा, श्री सुमति पद्म जिन धारा,

वही धारा श्रुतज्ञान की, अनेकांतमय वस्तु की प्रतिपाद्य ।।

जयतु जिनवर श्रुतदेवता, गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ।।3।।

सुपारसनाथ जी ने इसी को यथाक्रम, चंदप्रभ ने श्रुत परमागम।
चली पुष्पदंत तक गाथा, अनवरत रूप श्रुत धारा,
कोट्योदधि गुणी चली धारा, नो नो नो नो नो नो शून्य प्रमाण ॥
जयतु जिनवर श्रुतदेवता, गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ॥4॥

भावार्थ - इस युग (होंडापसर्पिणी काल) के आदि में प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ द्वितीय अजितनाथ फिर संभव, अभिनंदननाथ , सुमतिनाथ और पद्मप्रभ भगवान हुए जिन्होंने अनेकांतमय वस्तु का प्रतिपादन किया, इसी अनेकांतवस्तु को उसी क्रम में श्री सुपार्श्वनाथ, चन्द्रप्रभ और पुष्पदंत भगवान ने अनवरत रूप से बताया।

और इन्हीं तीर्थंकरों (आदिनाथ भगवान से पुष्पदंत भगवान) तक श्रुतपरम्परा अनवरत रूप से 9999990 करोड़ वर्ष तक चलती रही।

{दोहा}

श्रुतवारि से तृप्त थी, वसुधा चौथे काल।

बंजर भूमि हो गई, पुष्पदंत के बाद ॥

मुनि न कोई धर्म न, न प्रभु का सद्भाव।

दशा हुई उस काल की, व्युच्छुत्ती के बाद ॥

है प्रमाण श्रुत देवता, जैन धर्म के मूलभूत यह प्राण।

इनकी भक्ति हो किस तरह, यदि न होवे इनका गर्भित ज्ञान ॥

<u>भावार्थ</u> – उस चतुर्थ काल में श्रुतरूप जल से पृथ्वी तृप्त थी परंतु पुष्पदंत भगवान के बाद (नौ करोड़ सागर प्रमाण गणना से युक्त पल्योपम के चतुर्थ भाग शेष रहने पर) यह पृथ्वी बंजर हो गई अर्थात् धर्म की व्युच्छुति (चतुर्विध संग,धर्म का अभाव) हो गई।

…………

भव्यों हेतु श्री शीतल स्वामि, शीतलता जग मे फैलाई ।

पर पुनः कड़ी यह टूटी, बस अर्ध पल्ल अवधि थी,

फिर श्री आए श्रेयांशजिन, चौवन सागर चली ये श्रुत की धार ॥

जयतु जिनवर श्रुतदेवता, गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ॥1॥

वसुपूज्य सुत ने फहराई, तीस सागर बस ध्वज उड़ पाई।

फिर हुई धर्म व्युच्छुत्ती, पर विमलनाथ उत्पत्ति,

से हुई धर्म प्रभावना, पूर्व अनंत के टूट गई फिर धार ॥

जयतु जिनवर श्रुतदेवता, गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ॥2॥

<u>भावार्थ</u> - इसके बाद श्री वसुपूज्य के पुत्र अर्थात् वासुपूज्य स्वामी ने धर्म तीर्थ का प्रवर्तन तीस सागर तक किया, परंतु पल्य के अंतिम भाग तक के लिए पुनः धर्म व्युच्छुति हो गई, इसके बाद विमलनाथ भगवान ने नौ सागर पौन पल्य समय तक तत्त्व उद्घाटित किया, बाद में पल्य के चौथे तक के लिए पुनः धर्म की व्युच्छुति हो गई।

फिर अनंतनाथ भगवान ने चार सागर के अंतिम पल्य के आधे भाग तक धर्म स्थापित किए रखा परन्तु पुनः पल्य के आधे भाग के लिए पुनः धर्म विच्छेद हो गया।

चार सागर के अंतिम पल्ल के, आधे भाग मे धर्म से अलग हुए।

फिर आए धर्म जिनेशा, स्यातवाद तत्व उपदेशा,

धर्म फिरसे विघटित हुआ, पौन पल्ल कम तीन उदधि के बाद ॥

जयतु जिनवर श्रुतदेवता गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ॥3॥

<u>भावार्थ</u> - पुष्पदंत भगवान के बाद पुनः धर्म ध्वजा को फहराने के लिए शीतलनाथ स्वामी का उदय हुआ, 100 सागर 66 लाख 26 हजार वर्ष कम एक

करोड़ सागर प्रमाण काल तक शीतलनाथ स्वामी द्वारा श्रुत परम्परा चली परन्तु आधे पल्य के लिए पुनः धर्म की व्युच्छुति हो गई।

उसके बाद श्रेयांसनाथ भगवान का उदय हुआ जिन्होंने 54 सागर प्रमाण काल में पल्य का 3/4 भाग शेष रहने तक श्रुत परम्परा चलाई।

ऐसे पाप के विषम समय पर, आए शांतिप्रभु चक्री पद धर

अनवरत चली शांतिधारा, कुंथु अर मल्लिनाथा ,

नाथा मुनिसुवृत नाथ जी, नमि नेम पारस जिन वर्धमान ।।

जयतु जिनवर श्रुतदेवता, गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ।।4।।

<u>भावार्थ</u> - इसके बाद धर्म स्थापनार्थ सोलहवें तीर्थंकर पांचवें चक्रवर्ती श्री शांतिनाथ जिनेश्वर का उदय हुआ, और इनके बाद श्री कुंथुनाथ, श्री अरनाथ, श्री मल्लिनाथ, श्री मुनिसुव्रतनाथ, श्री नमिनाथ, श्री नेमीनाथ, श्री पार्श्वनाथ एवं श्री महावीर भगवान के साथ तीन अनुबद्ध केवल (गौतमस्वामी, जंबूस्वामी, सुधर्म स्वामी) तक अनवरत रूप से धर्मचक्र चलता रहा। इन्होंने दिव्यध्वनि से भव्यों का कल्याण किया।

{दोहा}

खिरी अनवरत दिव्यध्वनि, धारा रहा अखंड।

शांतिनाथ भगवान से, वर्धमान पर्यंत ॥

अनुबद्ध त्रय केवली, इस युग पंचम काल।

जिनवाणी उपदेश से, किया भव्य कल्याण ॥

है प्रमाण श्रुत देवता, जैन धर्म के मूलभूत यह प्राण।

इनकी भक्ति हो किस तरह, यदि न होवे इनका गर्भित ज्ञान ॥

सारे केवली जब मोक्ष पधारे, कौन दिव्यध्वनी पान कराये।

श्री यतिवर्यों ने आकर, थामा फिर श्रुत का शासन ,

विष्णु नंदी अपराजित, गोवर्धन अरु भद्रबाहु शुभनाम ॥

जयतु जिनवर श्रुतदेवता, गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान॥1॥

ग्यारह अंग चौदह पूर्व धारी, मुनिजन थे विष्णुआदि।

सौ वर्ष सुशासन थामा, शुद्धातम को पहचाना,

फिर दस पूर्व के धारी, ग्यारह यति ने किन्हा धर्म प्रचार ॥

जयतु जिनवर श्रुतदेवता, गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ॥2॥

<u>भावार्थ</u> - यहां तक कि श्रुत परम्परा साक्षात् केवली भगवन्तों के द्वारा चल रही थी परंतु अब पंचम काल का प्रारंभ हो गया और केवलज्ञान सूर्य का अस्त हो

गया, केवलियों के बाद विष्णुकुमार, नंदी, अपराजित, गोवर्धन और भद्रबाहु इन 11 अंग और 14 पूर्व के धारी आचार्यों ने जिनवाणी का रसपान कराया।

पंचाधिक एकसौ अस्सी, विशाखदत्त प्रौष्ठिल क्षत्रिय।

जय,नाग,विजयसेन नाम, सिद्धार्थ, धृति बुद्धिमान,

नङ्ग,धर्म मुनिनाथ ने, श्रुतवाणी को कर के रखा सम्हाल ॥

जयतु जिनवर श्रुतदेवता, गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ॥3॥

भावार्थ - इन पांचों श्रुतज्ञानियों के 100 वर्ष व्यतीत होने के बाद 10 पूर्व एवं 11 अंग के धारी ग्यारह मुनिराजों ने तत्व प्रचार किया, जिनके नाम इस प्रकार हैं - विशाखदत्त, प्रोष्ठिल, क्षत्रिय, जयसेन, नागसेन, सिद्धार्थ, धृतिसेन, विजयसेन बुद्धिमान, गंग तथा धर्म।

....

द्रुमशेन पांडू कंस जयपाल, **नक्षत्र** ये पांच हुए महाराज।

ये ग्यारह अंग मुनि थे, बीस दोसो वर्ष रहे थे।

इनके चिंतन में आत्मा, आत्म रूप का नित्य रहे मम ध्यान ॥

जयतु जिनवर श्रुतदेवता गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ॥4॥

द्वादशांग का प्रथमा अंग अठरह वर्ष तक आचरंग।

सुभद्र,अभय,जयबाहु, लोहार्या महामुनि साधु,

इनका ज्ञान अगम्य था इनके पीछे क्रमशः हुआ ह्रास ॥
जयतु जिनवर श्रुतदेवता गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ॥5॥

आचाराङ्ग का एकदेश भाग, विनयधर श्रीदत्त के पास।
शिव, अर्हद्दत ने जाना, श्रुतवाणी को अपनाया,
इनके मध्य इक महान् संत, अर्हद्बली मुनिवर का प्रादुर्भाव ॥
जयतु जिनवर श्रुतदेवता, गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ॥5॥

<u>भावार्थ</u> - इनके बाद ग्यारह अंग के धारी पांच मुनि नक्षत्र, जयपाल, पांडू, द्रुमसेन, और कंस यह 220 वर्ष तक इस भारत भूमि पर रहे।

इनके बाद क्रमशः चार आचार्य सुभद्र, अभयभद्र, जयबाहु और लौहार्य ये द्वादशांग के प्रथम अंग (आचारांग) के ज्ञानी थे, इन तक ज्ञान का क्षयोपशम बहुत था इनके बाद और अधित पतन होने लगा।

पश्चात विनयधर, श्रीदत्त, शिवदत, और अर्हद्दत्त के पास एक देश अंगपूर्व का ज्ञान शेष रहा। इन्हीं ज्ञानी आचार्यों के समय में पुण्डवर्धन नगर में अष्टांग के ज्ञाता अर्हद्बली नाम के मुनि का उदय हुआ।

{दोहा}

श्रुतधारा थी अनवरत,सुनते ही बस याद।

मति की लघुता बढ़ गई,इन मुनियों के बाद ॥

अर्हद्वली समकाल में,यतिवर श्रेष्ठ महान्।

जूनागढ़ के निकट में,चंद्र गुफ़ा में वास ॥

है प्रमाण श्रुत देवता जैन धर्म के मूलभूत यह प्राण।

इनकी भक्ति हो किस तरह यदि न होवे इनका गर्भित ज्ञान ॥

<u>भावार्थ</u> - इन मुनिराजों तक श्रुतधारा श्रुति रूप अनवरत रूप से चल रही थी, परंतु इनके बाद लोगों का क्षयोपशम कम होने लगा, लोग सुने हुए को याद रखने में असमर्थ होने लगे, यही विकल्प इन्हीं मुनिराजों के समय में ही जूनागढ़ के निकट चंद्र गुफा में ध्यानस्थ धरसेन आचार्य को हो आया।

....

युगप्रतिक्रम संघसम्मिलन में, अनुग्रह निग्रह दक्ष मुनिवर ने।

जब पूछा कि सब आ गए अर्हतबली श्री मुनि नायक ,

उत्तर आया हम आए गए अपने अपने संग सहित मुनिराज।

जयतु जिनवर श्रुतदेवता गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ॥1॥

यति ने तब मन में विचारा, कैसे चले अब धर्म की धारा।

तब संघ अनेकों बन गए, मुनिजन सब संघ में बट गए,

तब ये नंदी, देव ,वीर,भद्र और सिंह संघों के करके नाम।।

जयतु जिनवर श्रुतदेवता गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ।।2।।

<u>भावार्थ</u> – अर्हद्बली आचार्य ने उस समय 100 योजन तक के मुनिराजों को बुला कर युगप्रतिक्रमण कराया, उस समय सभी मुनिराजों के आने पर आचार्यदेव ने पूछा कि 'क्या सभी मुनि आ गए' तब मुनिराजों ने उत्तर में कहा कि 'हे आचार्य हम अपने अपने संघ सहित आ गए हैं'। इस उत्तर को सुनकर आचार्यदेव ने मन में विचारा की अब धर्म इस प्रकार ही संघों में विभाजित होकर चलेगा। अतः उन्होंने गुफा से आए मुनियों को नंदी व किन्हीं को वीर संज्ञा दी, जो प्रसिद्ध अशोक उद्यान से आए थे उन्हें अपराजित किन्हीं को देव नाम से अभिहित किया, जो गृह विरत साधु पंचस्तूप्य निवास से आए थे उनमें किन्हीं को सेन तथा किन्हीं को भद्र नाम दिया , शाल्मलि–केशर वृक्षों की खोह से आए भद्र तथा सिंह , इन सबको मुख्य रूप से नंदी, देव, वीर, भद्र और सिंह इन नाम से अभिहित किया।

....

यति श्री धरसेन मन में विचारें, श्रुतधारा कैसे बहावें।

एक पत्र किया तब सर्जन , भेजो दो ज्ञानी मुनिजन,

अर्हद्बली ने तब भेजे, तीक्ष्ण बुद्धि के धारी दो मुनिराज।

जयतु जिनवर श्रुतदेवता गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ।।3।।

....

धरसेन मुनि ने स्वप्न देखा आता हुआ बैल का जोड़ा।

तब नेत्र स्वतः ही खुल गए मुख यूं वचन निकल गए,

जयदु सिरी (श्री) सुद देवता अब होगा जिनवाणी का लिपि काम।

जयतु जिनवर श्रुतदेवता गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ॥4॥

दक्षिण से पश्चिम आना, दो मुनि का फल यह जाना।

थी अर्हद्बली की आज्ञा, दोनों मुनि रखी प्रतिज्ञा,

पहुंचे धरसेन मुनि पास में पुष्पदंत और भूतबली मुनिराज॥

जयतु जिनवर श्रुतदेवता गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ॥5॥

भावार्थ - उस समय के प्रमुख आचार्यों को अब यही चिंता मन में होने लगी थी कि श्रुत परम्परा आगे कैसे बढ़े, उनमें धरसेन आचार्य ने जिनवाणी को लिपिबद्ध करने के लिए अर्हद्बली आचार्य को दो योग्य मुनिराजों को बुलवाने के लिए पत्र भेजा।

तब वहां से आचार्यदेव ने दो अत्यंत तीव्र बुद्धि के धारी मुनिराजों को जूनागढ़ भेजा, और जैसे ही वह मुनिराज धरसेन आचार्य के पास आने के लिए निकले उस रात्रि को उन्हें स्वयं में दो श्वेत बैलों का जोड़ा आता हुआ दिखा।

उस स्वपन का फल जानकर उनके मुंह से तुरंत " जयतु श्रुत देवता" अर्थात् श्री श्रुत देवता जयवंत हों यह वचन निकल गए, और यह विश्वास हो गया कि अब जिनवाणी का लिपिबद्ध कार्य प्रारंभ हो जाएगा।

{दोहा}

दोनों मुनि को साधने, दिए मंत्र मुनिराज,

यदि कर पाए सिद्ध तो, हो जाओगे पास।

दोनों मुनि ने कर दिया, प्राप्त सूत्र का ध्यान,

सिद्ध होय पर अटपटी, देवी आएं पास।।

है प्रमाण श्रुत देवता जैन धर्म के मूलभूत यह प्राण।

इनकी भक्ति हो किस तरह यदि न होवे इनका गर्भित ज्ञान।।

दोनों ने मन में विचारा, क्या है इन मंत्र में बाधा।

मुनियों ने मंत्र सुधारे, अब सुंदर देवी आवैं,

लेकिन उनसे क्या प्रयोजन, जब हो केवल आत्मरूप का ध्यान ।।

जयतु जिनवर श्रुतदेवता गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ।।1।।

सब विधि हुई सफल परीक्षा, प्राप्ति हुई गुरू की शिक्षा।

गुरु ने तब कार्य को सौंपा, आशीष वचन से बोला,

उनने तत्क्षण स्वीकारा, निकल पड़े देने श्रुति को श्रुत रूप।

जयतु जिनवर श्रुतदेवता गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ।।2।।

सुदी ज्येष्ठा पंचमी आई, मुनियों ने कृतियां बनाई।
पद नमोकार का दीन्हा कर्मों की व्याख्या किन्हा,
पहला श्रुत वह स्कंध था, पड़ा ग्रंथ का षटखण्डागम् शुभ नाम ॥
जयतु जिनवर श्रुतदेवता गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ॥3॥

आगे हुई रचनाएं बहुधा, सब की रही हम पर करुणा।
इस कलिकाल में आए,सबको आतम बतलाए,
वे थे कुंदकुंद महान् संत,चौरासी पाहुड़ का दें वरदान ॥
जयतु जिनवर श्रुतदेवता गुरुवर्यों की गाथा करूं बखान ॥

भावार्थ – धरसेन आचार्य के निवेदन से अर्हद्बली आचार्य की आज्ञा को पाकर दक्षिण पश्चिम आने वाले उन दोनों मुनिराजों का नाम पुष्पदंत और भूतबली था।

जिनवाणी को लिपिबद्ध करना यह बहुत विशाल कार्य था अतः धरसेन आचार्य ने पहले दोनों मुनिराजों की योग्यत जांचने के लिए उन्हें दो मंत्र दिए जिसमें से एक में एक अक्षर कम और एक में एक अक्षर अधिक था।

जब मुनिराजों ने इन मंत्रों को साधना प्रारंभ किया तो उनके सामने एक दांत अधिक एक आंख कम बाली देवी प्रगट हुई इस घटना को देख मुनिराजों ने तुरंत ही मंत्रों को सुधार का पुनः मंत्र सिद्ध किए जिससे उनके सामने सुंदर देवियां प्रगट होकर सेवा का आदेश मांगने लगी परंतु मुक्तिबधु के प्रेमी मुनिराजों को उनसे क्या ही प्रयोजन।

और फिर पूर्ण विश्वास के साथ आचार्य धरसेन ने दोनों मुनिराजों को संपूर्ण जिनवाणी का अध्ययन करा कर ग्रंथ रचना का कार्य सौंप दोनों को विहार करने का आदेश दे दिया।

दोनों मुनिराजों ने पूर्वाचार्यों से प्राप्त श्रुत को ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन ग्रंथ रूप दिया और वह प्रथम श्रुत स्कंध षटखण्डागम कहलाया, जिसमें जीव समास, गुणस्थान, मार्गण स्थान आदि अनेक जैन सिद्धांतों का वर्णन किया।

तब से ही ग्रंथों की रचना का कार्य प्रारंभ हो गया और आगे इसी क्रम में हमारे महाभाग्य से कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य भगवान कुंदकुंद देव ने स्वयं का परिचय कराने वाले समयसार आदि 84 ग्रंथों की रचना।

{दोहा}

यद्यपि श्री अरहन्त ने, बतलाया द्वादशांग।

प्राप्त नहीं पर प्राप्त है. स्व पर भेद विज्ञान॥

द्वादशांग का सार है, जानूं आतमराम।

अनुयोगों का प्रयोजन, शुद्धातम का भान॥

करूं भान शुद्धात्म का, यदि हो कोई विकल्प।

श्री जिनेन्द्र पद माथ हो, शीघ्र करूं भव अंत।

<u>भावार्थ</u> - अरहन्त भगवान की दिव्यध्वनि में अनेक बातें आई और आचार्यों ने अनेक ग्रंथों की रचना की जो वर्तमान में हमें सम्पूर्ण प्राप्त नहीं है, हां लेकिन हमें प्रयोजनभूत स्व–पर भेद विज्ञान प्राप्त है और सम्पूर्ण द्वादशांग, अनुयोगों का प्रयोजन ही आत्मा को जानना है, अतः हम शुद्धात्म को जाने उसी में लीन हों, और यदि आत्मा से अलग कोई विकल्प हो तो वह केवल श्री जिनेंद का स्मरण हो।

इस प्रकार अति संक्षेप में मैंने यह श्रुत परम्परा की कथा कही इसका विस्तार श्री श्रुतावतार ग्रंथ में है, वह भी मात्र 70 पृष्ठों का अत्यंत सरल ग्रंथ है जिसमें आपको ग्रंथ रचना आदि का विशेष इतिहास जानने को मिलेगा इसीलिए आप उसे अवश्य पढ़ें।